Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 5, May 2013

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 5, May 2013 **वर्ष 18, अंक 5, मई 2013**

Editor/संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Assistant Editors/सहायक संपादक
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव
Production Officer /उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator/चित्रकार
Sanjay Bhatt
संजय भट्ट

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070
Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd., 203-204, DSIDC Shed, Ph-I, Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi.

Contents/सूची

भय–निर्भय	डॉ. अमिताभ शंकर रायचौधरी	2
The Burning of the Khandava Forest	Santha Rangachary	6
The Big, Banyan Tree	Prema Ramakrishnan	12
रोज कहानी	प्रकाश मनु	14
My Ideal Player	Soham Sen Gupta	15
पानी में बर्फ़ और उबाल साथ–साथ	आइवर यूशिएल	16
गुड़िया की चप्पल	रेनू चौहान	17
मेरी पहली पिकनिक	गुलअफशा	18
Raju	Avani Medhekar	20
Evils of Proudness	Manas Ranjan Samal	21
Kulkulbaazi	Mohan Lal Mago	23
जरा–सी भूल	सरला भाटिया	25
How the Tortoise got his Shell!	Ratna Manucha	29
हरे अंडों वाले एमू	शैलेन्द्र सरस्वती	31

***Editorial Address* / संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070
राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070
E-Mail (ई–मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in

Per Copy / एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription / वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**
Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**
कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.
यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

Festival of Reading

As part of NBT's continuous effort to promote reading habit and books in the tribal areas, a *Festival of Reading* was held from 29 March to 1 April 2013 at Damanjodi (Koraput, Odisha) in collaboration with National Aluminium Company (NALCO), M&R Division. A Seminar, a Women Poets' Meet, a Reading Session with eminent Hindi Poet Shri Manglesh Dabral, a Literary Conference and a 4-day exhibition of books were held in this Festival.

The Festival was inaugurated by Shri B.N. Mohanry, Executive Director, NALCO, M&R Division on 29 March evening. Lauding NBT's effort for the promotion of reading habit in remote areas, Shri Mohanty hoped that such endeavours will help in creating a book reading society in the under-privileged sector.

Dr. Chaganti Tulasi, eminent scholar in Telugu and Odia chaired over the seminar on the topic *Amara Adivasi Sanskruti 0 Ajira Sahitya*. Shri Pravakar Swain, Subash Chandra Mishra, Dr. Narayan Panda, Bijay Upathyay, Rabi Satpathy, Deepanwita Das among others took part in the discussion.

The *Women Poets' Meet* on 31 March was chaired by Dr. Prativa Satpatty, eminent poet. Several noted women poets from the state including

Dr. Ranjita Nayak, Pravasini Mahakud, Sailabala Mahapatra, Paramita Satpathy, Sujata Choudhury, Deepanwita Das, Dr. Pritidhara Samal, Madhuri Panda and Rajalaxami Sahu participated in the meet. This was followed by a *Literary Conference* the same evening.The next day, Mangalesh Dabral, eminent poet in Hindi and Executive Editor, *The Public Agenda*, Dr. Paramananda Rajabanshi, Vice- President, *Asam Sahitya Sabha*, Dr. Krutibas Nayak and Sailabala Mahapatra, eminent authors interacted with children. Over 20 children recited their poems on the occasion.

Several senior functionaries from NALCO, M&R Division including Shri Rabi Narayan Tripathy, GM, Hemant Kumar Pal, DGM and R.S. Das, DGM graced these events as chief guests. Manas Ranjan Mahapatra, Editor, NBT, Chandiprasad Rao, Convener, Welfare Committee, NALCO and Ameya Vikramanandan Bhuyan, poet and activist coordinated this Festival.

धारावाहिक 'सात समुंदर'

भय-निर्भय

डॉ. अमिताभ शंकर रायचौधरी

अनंती ने रसोईघर से आवाज दी–''अरे गायत्री, सुन तो बेटी!''

गायत्री पढ़ रही थी। वहीं से उसने पूछा – ''क्या है माँ?''

''जरा कॉफी की प्याली, गिलास अब आँगन से धोके तो ला।''

''अभी आई माँ।''

गायत्री बैठकर बरतन साफ कर रही थी। अचानक उसका हाथ रुक गया। उसके गले से एक चीख निकली–''अम्मा– दादी!''

''अरे बहू, देखो तो बिटिया को क्या हुआ!'' दादी ने माला फेरते–फेरते ही आवाज दी। फिर स्वयं उठने की कोशिश करने लगी।

अनंती भी चौके से बाहर निकल आई – ''क्या हुआ?''

तभी ठाकुरजी के कमरे से नारायणन भी निकल आए थे। बाहर निकलकर उन्होंने जो दृश्य देखा उससे वह एकबारगी स्तब्ध रह गए। समझ में नहीं आया कि हा–हा करके ऊँची आवाज में हँस दें या अपना ही सिर पीट लें।

गायत्री के हाथ से स्टील की प्याली गिर चुकी थी। वह आँखें फाड़कर देख रही थी। उसके दोनों हाथ फैले हुए थे – और ठीक उसके सामने बैठा एक बड़ा–सा मेढक उसे

निहार रहा था। बड़ी–बड़ी आँखें, सिर पर जड़ी मोतियों की तरह चमक रही थीं। गले के नीचे पीली चमड़ी ऊपर–नीचे हो रही थी। ''टर्र–टर्र!'' जैसे पूछ रहा हो – ''हेलो, कैसी हो– बोलो ?''

अनंती मुँह पर आँचल दिए खिलखिलाकर हँस पड़ी। आँगन के केले के पेड़ पर एक बोनमान यानी रामचिरैया बैठी इधर–उधर ताक रही थी। कहीं किसी आँगन में मछली दिख जाए तो वह फुर्र से उड़कर झपटे। रामचिरैया चौंककर उड़ गई।

नारायणन आगे बढ़कर अपनी कुमुमोल गायत्री की पीठ थपथपाने लगे। एकाएक उन्हें यक्षगान के नाटक के पात्र दुर्योधन के संवाद याद आ गए – 'अरे डर! बता कहाँ है तेरा घर? जिन्होंने दिया हथियार डाल, तू रहता उनके दिल के अंदर!'

गणित के शिक्षक शशिशेखर नारायणन को लगा जैसे शून्य से गुणा कर दो तो कोई भी संख्या सिर्फ शून्य ही हो जाती है, उसी तरह मन में एक बार डर समा जाए तो किसी का कोई भी गुण धरा–का–धरा रह जाता है। उनकी पोती को जीवन में आगे बढ़ना है कि नहीं। उन्होंने अनंती से कहा, ''घर के अंदर दुबककर रहते–रहते तो गायत्री और भी डरपोक बन जाएगी। कल से मैं इसे भी अपने साथ पंपा में ले जाऊँगा।''

''वहाँ जाकर यह क्या करेगी?'' दादी ने पूछा।

''तैरना सीखेगी।''

किसी को कुछ कहने का अवसर दिए बिना वे वापस मुड़ गए अपने कमरे की ओर।

भोर होते ही उन्होंने गायत्री को भी जगाया, ''चल–चल, मुँह–हाथ धो ले!''

शुरू–शुरू में गायत्री में भी काफी उत्साह रहा। जल्दी से तैयार होकर अपने दद्दा के पास आ खड़ी हो गई।

''अरे, एक गमछा नहीं लिया?'' नारायणन ने पूछा। यह कहते हुए उन्होंने स्वयं तार पर लटके हुए कपड़ों में से उसका फ्रॉक, गमछा आदि लेकर एक झोले में भर लिया।

नए वर्ष के प्रारंभ में 'विशु' का उत्सव चारों ओर मनाया जा चुका है। तिरुवनंतपुरम के पद्मनाभस्वामी मंदिर में बड़ी धूमधाम के साथ 'अरात' और 'उल्सावन' के उत्सवों का भी समापन हो चुका है। बस बादलों को जैसे इसी अवसर की तलाश थी। मई के आरंभ में ही देखते–देखते अरब सागर से उड़कर ये काली परियाँ केरल के आकाश में मँडराने लगीं। कई दिनों से जब–तब बारिश हो रही थी। इस समय पानी बरस नहीं रहा था। झिलमिलाती सड़क पर ये दोनों आगे बढ़ रहे थे।

''पाँय लागू मास्टरजी!'' भोर के मीठे प्रकाश में उधर से आते हुए आदमियों के झुंड से एक ने कहा।

नारायणन ने मुस्कुराकर हाथ उठाया।

ये सभी गाँव के बाहर रबर के बगीचे में काम करते हैं। भारत में नब्बे प्रतिशत रबर का उत्पादन तो केरल में ही होता है। वैसे, केरल 'केरा' अर्थात् नारियल का आलयम यानी स्थान है। परंतु रबर के बगीचे से भी केरल का प्रायः कोई कोना अछूता नहीं है।

पंपा के किनारे भी दो–एक आदमी मिल गए। छोटा–सा गाँव। सभी एक–दूसरे को जानते हैं।

टीका लगाए हरिपदम के प्रतिष्ठित विद्वान नाम्बुदिरिपाद आ रहे थे। उन्होंने हँसकर गायत्री के सिर पर हाथ फेरा, ''तो आज

कुचुमोल भी अपने अप्पुपन के साथ स्नान करेगी।''

घाट के पास जाकर नारायणन ने सिर्फ एक बार कहा, ''ले गायत्री, तू भी कपड़े उतार ले।''

बस इतना कहकर उन्होंने तो पानी में छलाँग लगाई, इधर गायत्री सोच रही थी – आज रहने देते हैं। कल देखा जाएगा।

ओम नमो विवस्वते ब्रह्म भास्वते विष्णुतजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।
इदम् अर्धम् ओम श्री सूर्याय नमः।।

मैं सूर्य को प्रणाम करता हूँ जो विष्णु भगवान के समान तेजवान है। समस्त जगत को अपने कर्मों के प्रति प्रेरित करता है...

स्नान के बाद नारायणन सूर्य को स्तवन

भी कर चुके थे। गायत्री किनारे बैठी टुकुर–टुकुर देख रही थी, नदी में इक्के–दुक्के नाव चले जा रहे थे। मल्लाह लग्गी से नाव आगे बढ़ा रहे थे। कोई पूजा कर रहा था, तो कोई डुबकी लगा रहा था। घाट के ऊपर कबूतर गुटुर–गुटुर दाना चुग रहे थे।

''अरे गायत्री, इधर आ!'' उन्होंने उसे पुकारा।

''दद्दू, आज नहीं, कल... ।'' वह सिमटकर खड़ी रही।

''काल करे सो आज कर। आज करे सो अब,'' कहते हुए नारायणन नदी से घाट तक आ गए और नन्ही गायत्री को गोदी में उठाकर उन्होंने पानी में फेंक दिया।

हेडमास्टर साहब को मालूम था कि लहरों का सामना किए बगैर कोई आगे बढ़ नहीं सकता, दूसरों की उँगली पकड़कर जिंदगी जी नहीं जाती। इस बार उन्होंने ठान ली थी कि गायत्री को तैरना सिखाना है, सो आज 'करो या मरो' वाली मुद्रा में वे निष्पलक देखते रहे।

गायत्री डूब रही थी, पुनः पानी की सतह के ऊपर उसका सिर झाँक रहा था, वह पानी पीने लगी। एकाध बार उसका विवश स्वर सुनाई दिया,'' दद्दू, बचाओ, ओह!''

यह घाट, वृक्ष किनारे पर आते–जाते लोग, सारी पृथ्वी–उसकी आँखों के सामने अस्पष्ट होने लगी। अंततः वह हाथ–पाँव मारने लगी। देखते–ही–देखते वह पंपा के पानी में तैरने भी लगी।

एक बार फिर उसका सिर लहरों के नीचे अदृश्य हो गया। वह जरा–सा डूब गई। फिर तेजी से हाथ चलाने लगी। इतने में उसने पानी भी पी लिया था। फिर एक हाथ आगे बढ़ गई...

नाव पर बैठा इट्टु केट्टु मल्लाह चिल्लाने लगा, ''अरे गुरुजी, पोती को सँभालिए...''

नारायणन एक कदम आगे बढ़े, गायत्री की उँगलियों से उनका शरीर छू गया... ''अप्पुपन, ओह!''

लपककर उन्होंने उसे सीने से लगा लिया। गायत्री फफककर रो पड़ी, ''दद्दू!''

''धत पगली, रोती है?'' उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''देखो? तू चाहे तो सब कुछ कर सकती है।''

घर आते समय निलमपेरू की दुकान में वे रुक गए। उन्होंने पूछा, ''क्या खाएगी? इडली या भाजी?''

गायत्री हँस दी।

फिर क्या था? गायत्री रोज अपने अप्पुपन के साथ पंपा में नहाने जाती, आज दस हाथ, कल बीस हाथ... इस तरह धीरे–धीरे उसकी तैराकी की दूरी बढ़ती रही। घर आते समय दादा खुश होकर केले के पत्ते पर गरमागरम इडली खिलाते, कॉफी पिलाते।

यही था उसका पुरस्कार।

स्नेह का पुरस्कार।

(क्रमशः)

सी26/35–40ए, रामकटोरा, वाराणसी–221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

The Burning of the Khandava Forest

Santha Rangachary

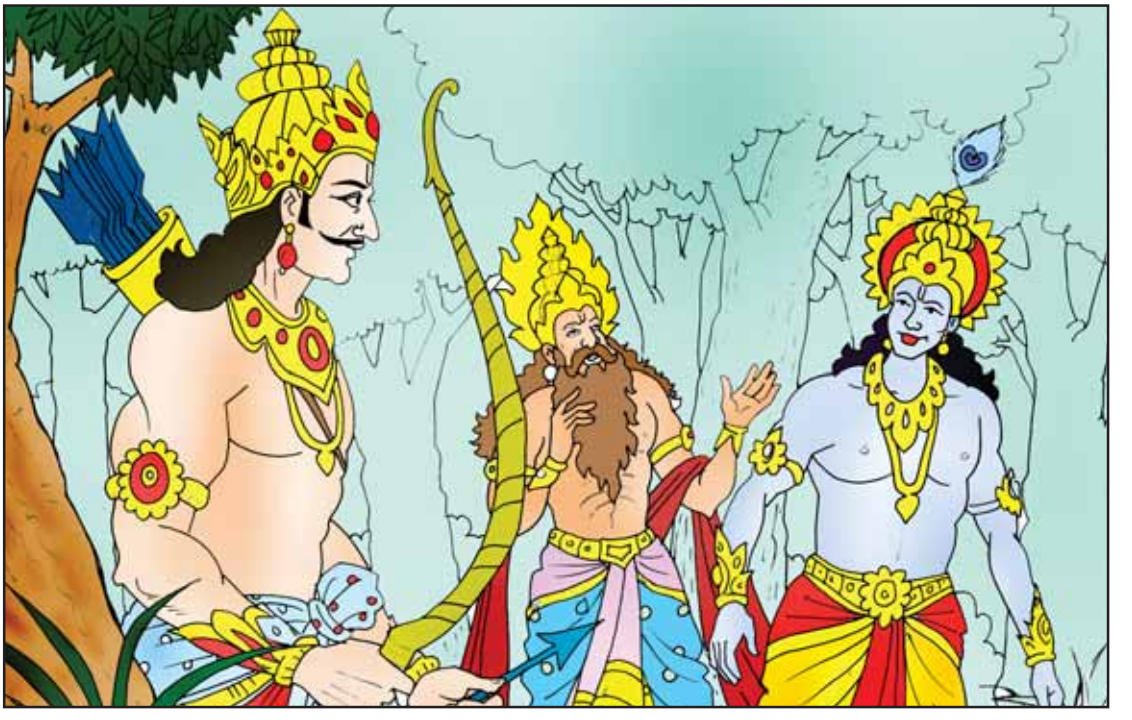

One day when the battle of Kurukshetra was over, and Yudhishthira had been installed as King of Hastinapura, Krishna and Arjuna were sitting on the banks of the Yamuna enjoying the cool evening breeze. Life had been peaceful since the battle ended — too peaceful for their liking. They enjoyed adventure and excitement.

As they sat gossiping about the new ministers and statesmen at the court, they saw a tall man, who looked noble but sick and troubled, coming towards them. He walked as if each step was a strain. He came near and said piteously: " Food, give me food. I am famished."

Krishna and Arjuna, speaking with one voice, said: "We shall immediately arrange for you to be fed to your heart's content. Sit down and rest while we order food." People were very hospitable in those days.

But the stranger shook his head and said: "I do not want ordinary food. I want crunchy, mouth-filling food. Can't you recognize me? I am Agni."

Krishna and Arjuna looked closer and saw that it was indeed the Fire God who had changed so much that they had failed to recognize him. They saluted him respectfully and seating him comfortably enquired about his welfare.

Had he been ill recently? What special food would he like? Even if it was rare and difficult to obtain, it would be brought and cooked as he wanted.

"There is no need to make anything," said Agni weakly. "My special dinner has already been prepared."

"Where is it ? What is it?"

"It is the Khandava forest."

"You mean it is in the Khandava forest."

"No, it is the Khandava forest itself."

"What?" asked Krishna with astonishment.

"You want to eat a forest?"

"Yes," replied Agni. "I shall tell you why. Have you heard of King Swetaki?"

"Yes," said Arjuna. "Isn't he the King who has acquired such fame and renown because of his religious ceremonies and sacrifices?"

"Yes," agreed Agni gloomily. "One day Swetaki undoubtedly will go to heaven. But while he is still on earth, not a Brahmin in his kingdom will speak to him."

"Why?" asked Arjuna.

"They have become almost blind in his service", explained Agni. "What else would you expect if you sat before a smoking fire and recited Vedic hymns day after day, month after month? I was not responsible for the smoke. After every kind of dry wood in the country had been exhausted, they tried to feed me with green branches. Hence the smoke. It got into the eyes and throats of those poor Brahmins. The result was that the King had to send for priests from a neighboring kingdom to officiate at his last ceremony."

"Do you mean that these religious ceremonies have been going on for a long time?" asked Arjuna, avoiding Krishna's eye in case they should both burst out laughing.

"Years," said Agni wearily. "No sooner did King Swetaki end one ceremony than he began another. He performed the five great sacrifices which all Kshatriya kings are expected to perform. Then he undertook another ceremony to give gifts to a thousand Brahmins. This was followed by yet another to please the gods so that the women and children in his kingdom would be happy and healthy".

"That does seem excessive even for a virtuous king", said Krishna gravely.

"Look what it has done to me!" said Agni sighing. "See my condition! You

could not even recognize me when I came. For years I have been only fed *ghee* which has been poured on me in barrelfuls during these endless ceremonies. Just think what it must be like to eat nothing but *ghee* for so many years! Look at my complexion. Where is the sheen, the glow, the radiance that was the envy even of women? I am famished for healthy, nourishing food. I feel listless and weak."

"Is that why you want to eat the Khandava forest?"

"Yes, that is one reason. The Khandava forest has everything I crave: dry trees which will crackle in my mouth, green, juicy plants, shrubs and vines whose sap I can lick with one of my many tongues, animals whose fat will taste like nectar to me."

"You said this was one reason," Arjuna said hastily. "Is there another?"

"Yes," replied Agni, turning away his thoughts with an effort from the idea of food. "The Khandava forest has become one of the outposts of the empire of Indra, the King of the gods of space. I have never understood why Indra, who wields so much power and has at his command innumerable gods, should suffer from a sense of insecurity. He is always on the lookout for possible rebels and usurpers, both on earth and in heaven. He sees enemies around every corner."

"So Indra has got friends and watchdogs in the Khandava forest?" asked Krishna.

"Yes, and guess who is their leader? Takshaka."

"What!" exclaimed Arjuna. "Does the King of serpents descend to the level of a spy and an informer?"

"He himself does not," said Agni. " I have no quarrel with him. We go our separate ways. But his army of snakes in the forest does not have as keen a sense of justice as he has. Moreover, there is a strange collection of fiends, demons, devils, monsters and unclean spirits. There are vampires, gnomes, dwarfs, giants and cannibals. There are curious-looking birds, savage beasts and ferocious brutes. People are afraid to go out after sunset because wild animals carry away their young. And throughout the night, such weird noises are heard from the depths of the forest that even grown-up men and women lie awake trembling. Something has to be done. The forest has to go."

"Do you really think you can consume this huge forest?" Arjuna asked doubtfully.

"Yes," said Agni licking his lips, "but I need help. I have tried to do it alone seven times but never even got started. Indra himself protects the forest with the help of the gods of the heavens. In despair, I went to Brahma, and he said:

'Go and ask Krishna and Arjuna to assist you.' Can you help me?"

Krishna waited for Arjuna to make the decision. The Khandava forest was part of his kingdom.

"We shall help you," said Arjuna after some thought, "but we need weapons. For instance, I want a heavier bow than the one I have and a large number of arrows. I would also need a chariot to carry this load. And the chariot must be drawn by pure white horses which can run as fast as the wind on wheels which, when they turn, will disperse the clouds for miles around. Krishna will want some weapons too. If you can supply us with these, we are ready to help you reduce the Khandava forest to a well- cooked meal."

"Krishna will only need the *chakra*," said Agni. "I shall give it to him myself. Arjuna., as for the weapons you want I'll ask Varuna to supply them to you."

Krishna got the *chakra*, a wheel with a serrated edge and a hole in the centre in which his right index finger fitted. He could throw it in such a way that it would cut off his enemy's head smoothly and swiftly and return to him like a boomerang.

Arjuna got Varuna's marvelous bow along with a magic quiver of arrows. When one arrow was taken out, another at once appeared in its place. He was also given a chariot built by Vishwakarman, the architect who had designed the universe. It had white steeds with golden harnesses which moved across the sky like a flash of lightning. In addition, Varuna gave Arjuna a huge mace which, when flourished, sounded like thunder.

Arjuna put on his coat of mail, girded his sword, drew on gloves of soft leather, strung his bow, examined the chariot for any possible defects and then turned to Agni.

"We are ready," he said. "Please go and surround the forest. Then Krishna and I will take up our positions. I promise you will get your Khandava meal."

As the God of Fire hissed his way round the Khandava forest, Krishna and Arjuna rose into space and stationed themselves above the dense green foliage.

Hundreds of living creatures, large and small, of all shapes, sizes and colours, had already smelt the fire and were looking for a means of escape. Some had huge heads and webbed feet, others were one-eyed and still others had scaly wings and long claws. Some of them panicked and ran straight into the fire. Burning like torches they rolled on the grass trying to put out the flames but tongues of fire spreading wider and wider in the forest caught them again and they died howling frightfully.

Large-winged strange birds rose like black clouds into the sky. Krishna and Arjuna's arrows dropped them into the flames below where, in the twinkling of an eye, they were reduced to steaming mounds of flesh. Deep in the forest many animals stood in terror watching with dilated eyes the flames creeping greedily closer and closer. Snakes tried to wriggle through the grass and escape but Agni, ever watchful, burnt the grass and they perished.

The streams and ponds within the forest began to boil because of the intense heat. Fish died in shoals and floated on the water.

The smell of burning flesh pervaded the forest. The people in the surrounding villages left their homes and fled from the sight, sound and smell of burning.

The gods of space watched in awe for a while and then went in a body to their King, Indra. Indra was furious.

"What!" he roared. "has the stupid, *ghee*-eating Agni dared to attack my stronghold in Khandava? Takshaka and I will teach him a lesson which he will never forget."

"If you remember, Sire," said one of the gods, "Takshaka is not in Khandava. He has not yet returned from Kurukshetra. But even if he were there, it would be difficult to protect Khandava."

"Why would it be difficult?"

"Because Agni is not alone. Krishna and Arjuna are helping him. At this moment their chariot is standing above the burning forest."

This made Indra pause for a moment. Krishna and Arjuna were famous warriors, and were known to be invincible. But such was the arrogance of the King of the gods that he swore that I will now take care of two birds with one stone — save the forest and at the same time defeat Krishna and Arjuna—and become the greatest warrior of the universe.

Having come to this decision, Indra set to work. He made his gods cover Khandava with miles of thick clouds overhead which would, at his bidding, pour rain over the forest.

As the clouds gathered above, Krishna and Arjuna fired innumerable

arrows just above the forest but below the clouds. These arrows, lying horizontally side by side, covered the forest like a canopy below the cloud level. They were so closely packed that when it began to rain, the water could not seep through, but slid off the umbrella of arrows and collected at the edge of the forest. Soon it was as large as a river. The fleeing forest creatures were caught between the fire and the water and perished in the one or the other.

Indra then brought his gods — Yama the God of Death, Kubera the God of Wealth, Vayu the Wind God and many others—into the fight and led them himself on his white elephant. But Krishna and Arjuna put them all to flight. Even Indra was routed. But he did not leave the field of battle and save himself. He had to keep his promise at any cost. He had to save Takshaka's wife and son. It was a pledge he had made to Takshaka when he had sought the serpent-King's help in managing the strange birds, beasts and reptiles with which he had filled the Khandava forest.

When Takshaka's wife saw Indra's magnificent mount over the forest, she came whizzing through the flames, her lovely skin singed by the heat. Arjuna saw the splendid female snake rise into the sky, and got ready to shoot her down. But Krishna stopped him. "O wife of Takshaka," he called out, "where is your

son? I cannot see him. Are you leaving him in the forest to perish while you escape?"

"My son is in my belly," replied Takshaka's wife.

"I swallowed him to protect him from the flames. You will have to kill me before you can get at him."

On hearing this, Arjuna dropped his bow. The Khandava forest burned for fifteen days. Agni, summing large quantities of flesh, blood and fat with his many flaming tongues, was at last satisfied. And when exhausted and sated, he stopped, the once large, thickly-populated forest stretching for miles in all directions was but an unending desert of grey and black ashes.

(From the NBT publication ***Tales for All Times***)

The Big, Banyan Tree

Prema Ramakrishnan

There was a big banyan tree. It stood in a clearing in the forest. Among its branches lived many birds. Along its trunk, in holes, lived squirrels. Travellers who passed by the forest also came to take shelter under its shade in the hot summer months.

Gopal, the cowherd also came to rest under its leafy boughs when he brought the cows to graze every morning. He loved the big, banyan tree, for it was here he ate his little lunch and lay down and kept watch as the flock grazed happily all along the grassy patches that grew alongside.

One evening before he was about to gather his cows and get home he saw two men arriving on the scene. He knew them to be woodcutters for he had seen them in the village. So he hid behind a bush to see what they were up to.

One of them said, "What a big tree! If we cut it, we can sell some of the wood and the rest can be used as firewood to last us through this winter".

The other man said, "Let us come before daybreak and begin the work of cutting. We don't want people to know that we have come here to chop them. We can cut a couple of branches at a time and not raise any suspicion."

Gopal was very upset when he heard this. The birds and the squirrels sensing danger began to weep and wail "Where shall we find such a nice shady tree with so many branches? We have lived here for so long. Our houses will be destroyed and little ones will die!"

Gopal understood their plight at once. He knew he had to help his bird and squirrel friends. He had to find a way to save the tree.

After the woodcutters went away Gopal also went home. He was very sad and wondered how he could help his friends.

That evening when he was eating his meal, he heard his father telling his mother.

"Do you know? Poor Kalu's dog was bitten by a cobra last night and it died".

His mother said, "We told them long ago not to build their house in that place. It is visited by an old cobra that is

supposed to live under that big banyan tree near the hillside. But they chose not to listen.

"Don't you remember what happened when some years ago somebody tried to cut down that big, banyan tree in the forest? One of the men got bitten by that very cobra. Yet they did not believe it. Nobody likes to believe such things even when tragedy befalls them. They call us superstitious if we tell them these tales."

Gopal was very excited. "Does a cobra really live there?" he asked. "Infact, some woodcutters were looking at that tree under which I sit every day when our cows are graze in the forest. So many birds and squirrels live on that tree. They are planning to cut it."

Gopal's mother said, "You should not sit under the tree! Find another place!" Before Gopal could reply, to Gopal's great delight, his father said, "We should not allow that tree to be cut. I will speak to the village head man in the morning."

Anyway, before his father could go to the village head man, Gopal decided to act. He woke up, as usual, at break of day and set off to the hillside with his cows.

He sat under the tree and waited for the woodcutters to arrive. They came with nicely sharpened axes to cut down the tree. Gopal said to them, "Please don't cut this banyan tree!"

The men were very angry. They were rude and said, "Look boy, out of our way. We have to cut this tree before anybody comes here. So keep out. And don't try to stop us or we shall show you how strong we are!" And one of them came to give the boy a big push.

Gopal said, "Don't cut the tree, I warn you. They say that an old cobra has been living under this tree for many years. If you cut down the tree, it will surely bite you!"

They ignored his warning and began the job of cutting. One of them had already climbed up the tree and was about to lop off a branch. Another was mid way through the climbing. Gopal tried in vain to stop them but would they listen? They did not believe the old superstitious village people. Just then Gopal heard some voices. Yes, the village head man was coming with his men. The woodcutters were very frightened and clambered down the tree at once!

The head man said to them, "If I see you cutting any tree again here, I will report and take you both to the forest officer and drive you out of the village! This time I am letting you go."

That day little Gopal became the hero of the village. He had saved his beautiful banyan tree for himself and all his beautiful friends.

रोज कहानी

प्रकाश मनु

एक कहानी परियों वाली
एक कहानी जिसमें हाथी,
एक कहानी जिसमें नटखट
जोकर बनता सबका साथी।

एक कहानी दिन भर लड्डू
जिसमें खाया करता शेर,
एक कहानी जिसमें बादल
से बरसे थे आहा, बेर।

एक कहानी गिल्लू वाली
पहना जिसने चाँदी छल्ला,
एक कहानी जिसमें चिड़िया
खेल रही थी लेकर बल्ला।

एक कहानी जिसमें मोटा
बिल्ला रास्ता भूल गया,
एक कहानी जिसमें चूहा
खा–खा करके फूल गया।

एक कहानी जिसमें चींटी
ने हाथी की पिट्टी की,
एक कहानी जिसमें खुशबू
ने जंगल में छुट्टी की।

ढेर कहानी मुझको सुननी
कहो, सुनाओगी ना नानी,
पर हर किस्से में कुक्कू हो
कुक्कू की हो नई कहानी।

इस पर हँसकर बोली नानी
कुक्कू यह तो है मनमानी
आ संग बैठें, रोज बनाएँ
तभी बनेगी नई कहानी।

नानी–कुक्कू, कुक्कू–नानी
दोनों बुनते रोज कहानी
हर किस्से में कुक्कू होता
हर किस्से में होती नानी।

545, सेक्टर–29,
फरीदाबाद–121008 (हरियाणा)

My Ideal Player

Soham Sen Gupta

I have an ideal player
I hope, you want to know

My ideal player is he
Who keeps on playing his game

My ideal player is he
Who never misses a chance

My ideal player is he
Who always scores his goal

My ideal player is he
Who has a strong sportsman spirit

My ideal player is he
Who never says, "I quit"

Above all, he has to be a good man
And a real man in reality

Madhubanti (Near Ashok)
34, Mohiary, 3rd Bye Lane
GIP Colony, Jagacha
Howrah -711112 (West Bengal)

खुद करके देखो

पानी में बर्फ और उबाल साथ-साथ

आइवर यूशिएल

तमाशे के लिए ज़रूरी सामानः

एक हार्ड ग्लास टेस्ट–ट्यूब, मोमबत्ती व माचिस, बर्फ, संड़सी तथा कुछ नट या वाशर।

तमाशे की तैयारीः

टेस्ट–ट्यूब को पानी से आधा भरकर, इसमें बर्फ के दो–तीन टुकड़े डालो। ये पानी की सतह पर तैरने लगेंगे।

बर्फ के टुकड़े सतह पर तैरने की जगह पेंदी से चिपके बैठे रहें इसके लिए टेस्ट–ट्यूब में इनके ऊपर से वाशर या नट डाल दो।

अब देखो तमाशाः

तुमसे यदि कोई कहे कि इस टेस्ट–ट्यूब का पानी उबलने लगेगा और बर्फ इसमें फिर भी मौजूद रहेगी तो तुम इस बात को शायद नहीं मानोगे। तुम्हारा कहना यही होगा न कि सारी बर्फ के पिघल जाने पर ही पानी उबलेगा? परंतु आज स्वयं देख लो कि सच क्या है।

टेस्ट–ट्यूब को संड़सी से मोमबत्ती की लौ के ऊपर थोड़ा झुकाकर इस तरह पकड़ो ताकि लौ टेस्ट–ट्यूब में भरे पानी की सतह के पास रहे, न कि इसकी पेंदी के पास।

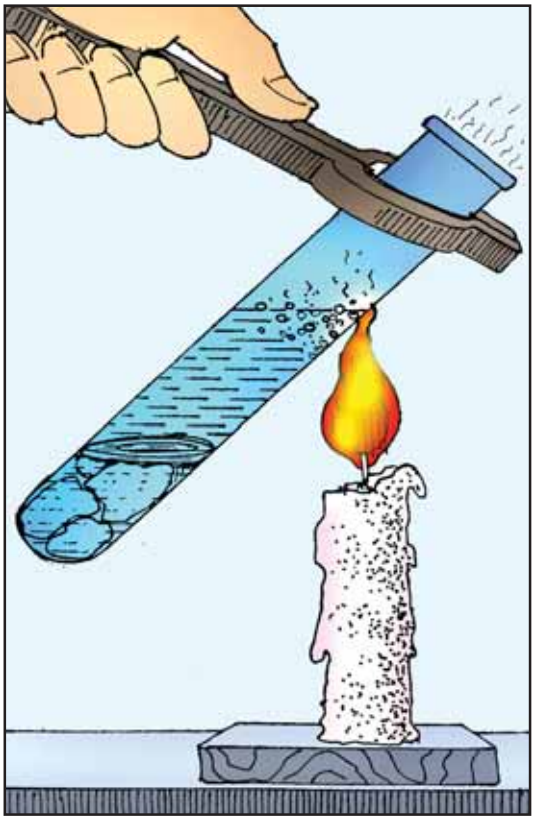

इस स्थिति में जल्दी ही सतह के पास पानी उबलता नज़र आने लगेगा, जबकि पेंदी में पड़ी बर्फ़ अपनी उसी रफ़्तार से धीरे–धीरे पिघलेगी जिससे यह पानी को बिना गर्म किए पिघलती। हाँ, लौ को पेंदी के पास रखा जाए तब तो बर्फ के पिघल जाने पर ही पानी उबलता है, यह बात ठीक है। पर ऐसा होता क्यों है, इसका कारण समझ में आया तुम्हारे?

खुद करके देखो

गुड़िया की चप्पल

रेनू चौहान

आइसक्रीम खाकर लकड़ी के चम्मच आप फेंक देते हैं ना? जानते हैं, इनसे आपकी गुड़िया के लिए सुंदर–सी चप्पलें बन सकती हैं? आइए जानें, कैसे?

सामग्री

- चप्पलें बनाने के लिए आवश्यक सामग्रीः आइसक्रीम खाने वाले लकड़ी के चम्मच, पसंद के रंग व उसी रंग का मोमी रंग, चिपकाने वाला पदार्थ।

विधि

- सबसे पहले आइसक्रीम के चम्मच को एक ओर से रंग लें। अब चम्मच के चौड़ी वाली तरफ ऊपर की तरफ उठी होनी चाहिए। लेस की ऊँचाई चम्मच से इतनी ऊँची हो कि पैर घुसाने की जगह हो। इसी तरह चम्मच की पतली वाली तरफ भी लेस लगा सकते हैं, जो कि चप्पल का पिछला हिस्सा होगा।
- ध्यान रखें, चिपकने वाला पदार्थ चप्पल की उलटी ओर लगाएँ।
- अगर आपके पास पतली लेस हो तो आप चप्पल पर लेस को क्रॉस की तरह भी चिपका सकते हैं।
- लीजिए, आपकी गुड़िया की चप्पल तैयार। पहनाइए गुड़िया को और ले जाइए उसे अपने साथ घुमाने। बस, इसी प्रकार अपनी पसंद के रंग व डिजाइन की चप्पलें बनाते जाएँ।

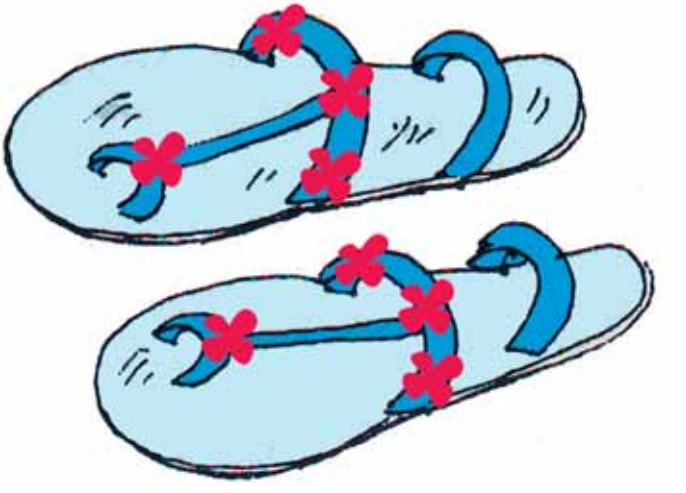

बी–बी/6बी, जनकपुरी
नई दिल्ली–110058

मेरा पन्ना

मेरी पहली पिकनिक

गुलअफशा

आज हम स्कूल की ओर से पिकनिक के लिए जा रहे हैं। आज मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि पूरे एक साल में आज हमें स्कूल की ओर से अपने दोस्तों के साथ घूमने का मौका मिला है। मैंने आज से एक दिन पहले पिकनिक पर जाने के लिए बहुत–सी तैयारियाँ की थीं। मैंने अपने बैग में बहुत–सी खाने की चीजें रखीं। ज्यादा नहीं, पर वह मेरे लिए काफी थी। उसके बाद जब पापा रात को घर पर आए तो मैंने उनसे कुछ पैसे माँग लिये, ताकि मुझे वहाँ पर कुछ खरीदना हो तो मैं वो खरीद लूँ।

रात भर मैं पिकनिक के बारे में सोचती रही। जब सुबह हुई तो मैं जल्दी–जल्दी तैयार होकर स्कूल के लिए निकली। जब मैं स्कूल में पहुँची तो मेरे सभी मित्र बातें कर रहे थे। हम एक–दूसरे से पूछ रहे थे कि कौन क्या सामान लाया है। उसके बाद बस आई और हम सब दौड़–दौड़कर बस में चढ़ने लगे। जब मैं बस में बैठी तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा और फिर हम पिकनिक के लिए रवाना हुए। प्रियंका मेरे साथ बैठी है। उसने मुझे उपहार दिया। जब मैंने उससे पूछा कि यह किसलिए है तो उसने मुझे याद दिलाया कि दो दिन पहले मेरा जन्मदिन था। उसके बाद मुझे पता चला कि ममता अपने साथ चाय लाई है। जब वह एक–दूसरे को चाय देने लगी तो बस के चलने के कारण वह हिल–हिलकर गिरने लगी और नगमा की स्कूल ड्रेस भी खराब हो गई। फिर हमने चिप्स खाए और गाना गाते हुए सफर का मजा लिया।

खिड़की के बाहर देखा तो नजारा बहुत सुहावना था। मौसम उस दिन बहुत ही अच्छा था। मेरे मन में से एक आवाज आ रही थी कि यह इतना अच्छा दिन बहुत ही जल्दी खत्म हो जाएगा। मैं थोड़ा उदास हो गई, फिर मैंने सोचा कि जो आया है वह तो जाएगा ही और इन सबकी चिंता छोड़कर मुझे इस समय मजा करना चाहिए।

सबसे पहले हम इस्कॉन मंदिर में जाने के लिए रवाना हुए थे और अब हम वहाँ पहुँच गए हैं। बाहर से देखने में ऐसा लगा कि अंदर और भी बहुत–सी सुंदर चीजें होंगी, परंतु अंदर जाने पर पाया कि यह तो एक साधारण–सा मंदिर है। परंतु बाद में पता चला कि अंदर एक सुरंग है। यह सुनकर मैं बहुत उत्साहित हुई। अंदर जाने पर मैंने बहुत–सी चीजें देखीं। मैंने उसमें एक मूर्ति देखी जिसकी शक्ल शालू से मिल

रही थी। उसके बाद जब हमने पूरे मंदिर की सैर कर ली तो हम खाना खाने के लिए एक साथ बैठे। हमने खाना खाने के बाद चॉकलेट खाई। उसके बाद मेरा मन किया कि मुझे हरी–हरी घास पर दौड़ना चाहिए। जब मैं दौड़ने लगी तो देखा कि फूलों की सुंदर–सुंदर क्यारियाँ हैं। वैसे, फूलों को तोड़ना नहीं चाहिए परंतु फिर भी मैंने वहाँ से दो–तीन फूल तोड़कर अपनी नोटबुक में रख लिए और अब हम बस पर बैठकर कुतुबमीनार के लिए रवाना हुए। जब हम कुतुबमीनार पहुँचे तो वहाँ पर बहुत–सी इमारतें थीं, परंतु सभी टूटी हुईं। अकेली एक कुतुबमीनार बिलकुल ठीक थी। उस पर अरबी भाषा में बहुत कुछ लिखा था। उसके बाद मैंने दूसरी इमारतों पर की हुई नक्काशी को छूना शुरू किया।

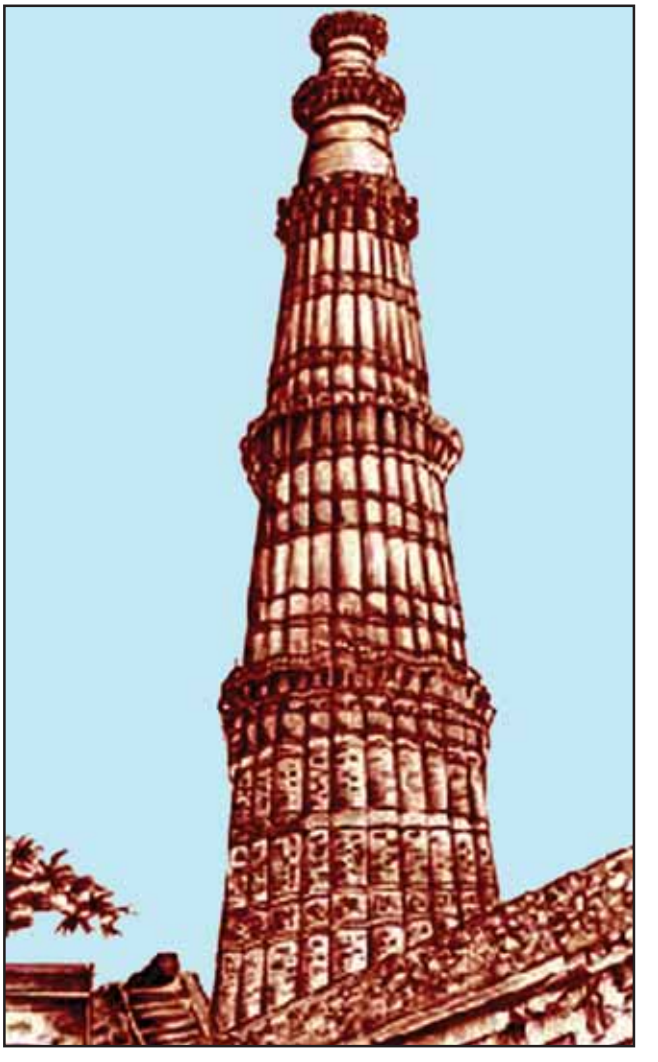

मुझे उसे छूने में बहुत ही मजा आ रहा था। मैंने एक–एक करके सारी इमारतों को छुआ। पर एक गाइड ने मुझे समझाया कि पुरातात्विक महत्व की ऐसी इमारतों और खंडहरों को हमें नहीं छूना चाहिए। मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ।

वहाँ पर बहुत–से विदेशी लोग भी थे। मैंने उनसे बात भी की और फिर हमने जब पूरा कुतुबमीनार देख लिया तो फिर घर के लिए रवाना हुए। जाते समय हमें बहुत–से अँग्रेज 'बाय' करने लगे और अब हम फिर एक–दूसरे से बातें करने लगे। बातें करते–करते हमें पता ही नहीं चला कि हम कब स्कूल पहुँच गए। वहाँ से हम अपने–अपने घर चले गए। घर पहुँचने पर मैं बहुत थक चुकी थी। परंतु मेरे हाथों में बिलकुल दर्द नहीं था और मैं यह लेख लिखने लगी।

My Page

Raju

Avani Medhekar

Lazy Raju spent his days sleeping and eating. His mother wanted him to be intelligent, smart and strong. He was too lazy that his parents had to take afternoon batch for his schooling. He had a bad habit, whenever he ate something he went to sleep in no time. He loved custard very much.

One day his friends Rajesh and Ramesh, the two brothers, went to his house to give some fruit custard. Raju smelled it, went to them, snatched the custard and ate it up.

Ramesh and Rajesh felt very bad as they had bought it for Raju and his family as well. They decided to teach Raju a lesson. His mother also felt that there was a need to teach Raju a lesson.

Next morning, they went for a picnic. Raju was very excited to hear this and thought, "I wonder where are we going?". Soon they were ready for the picnic. They reached Krish Garden.

Raju did not know that his uncle was the friend of the owner of the Krish Garden.

After having their breakfast, Raju fell asleep. The owner of the garden shouted at Raju. He said, "You boy, you have made the place untidy. You will be punished for this. Clean this place now!"

Raju was disappointed. Since Raju did not know that this was a plan to teach him a lesson, he started cleaning the garden. When he finished the work, his mother called him for the lunch. After having lunch, he remembered the punishment which was given to him after the breakfast. But he slept thinking that the man who scolded him was not there.

After some time he heard a noise, "You boy, you always make the place untidy, just now in front of me, clean it up again". He thought, "Why is this man scolding me?" And started cleaning the place.

After tidying up the place, he thought, "When I go to some mall or hotel, they do not scold me like this man, I must go and ask my mom the reason for this?" His mother told him that it was a lesson for him. He understood that it was a bad habit and never followed it again in his life.

Shri Arvind Chetra Kendra
Pune-38 (Maharashtra)

Evils of Proudness

Manas Ranjan Samal

There was a village, a small village. Neither it had a concrete road nor it was clean.

A barren stony road passed through bushy and dense forest.

Besides the small village having five to ten thatched houses, situated a barren hill covered with various types of trees like teak, sal, mango and many other trees. Flower plants with green leaves were stretched where animals and birds like elephant, deer, tiger and peacock had taken shelter.

A heavy shower of rain from the black cloud above the sky drenched the barren hill and a stream of water flowed down the village. Passing through bushes, surrounding villages and several bridges, the stream finally turned into a river. The stretched water dazzled as the rays of sun reflected on it.

The heavy shower from time and time again had formed a big river, starting from the barren hill. Now fishes started swimming, many plants grew along the river side. The river looked attractive in the moonlit night. Beasts and birds depended on the river for water. People started farming and cultivation due to surplus water of the river.

When it stretched a long way, many roads, buildings and bridges were constructed for a new township. Several civilizations like Indus valley civilization, Mesopotamia in Babylon and other human civilizations grew up on its banks and the banks of its stretched offsprings. Many hermitages and Ashrams were also established.

The importance of the river increased gradually. Balmiki wrote the Ramayana near river Tamasa . Sita made it sacred by taking birth, Shri Ram Chandra took exile for fourteen years on the banks of river Godavari. Merchants sailed on oceans for business purpose and accumulated wealth and gold.

Now the river took pride of such

developments due to its existence. Overcoming innumerable obstacles on the way, it advanced towards the sea.

Again when it rained in the rainy season, flood water made it over loaded and proud. This proudness crushed over many villages, corn fields resulting in death of large number of men and animals. Proceeding towards the sea, it took pride in destruction of many lives and creations whom it once nourished on its banks. It felt the pride of sharing happiness as well as sorrow at its own accord.

At last reaching its destination merging into the sea, the river accused the sea to be salty despite adding its sweet water. So came the hesitation to provide sweet water to sea as an alm but in response sea said that he had no loss or profit regarding any mixing or detachment of water. It was for the welfare of the community as a whole. Sea keeps its heart open for the Sun God to soak the water high above sky in the form of vapours of smokes.

But all these spiritual advices, river did not like to listen from the sea and returned without merging in the sea. Now the sea got annoyed and didn't allow its water to form vapours as a result of which no rain or monsoons could be created and there was no rainfall on the hilltop, so rivers dried up and turned into landscapes. Accumulated water became dirty and no one used it, everybody got disgusted with the river.

At last river could realize its mistake of its proudness and apologised before the sea and cried a lot. Sea forgave the river and allowed vapours to be formed as before and continuous process went on. Sacrificing oneself is the real service to mankind and it is the real emancipation for which rivers decided to merge into the sea.

144-Govt. Ind. Tenement
Charbatia-754028
Dist. Cuttack (Odisha)

Kulkulbaazi

Mohan Lal Mago

It is really good at winning competitions, making thousands of humans flock to kabootarbaazi events—the amazing science of training them to do so.

At Kuberpur (Agra), the *Khalifas* or pigeon-fanciers show off their skills. The trick for someone to win the competition is that if he starts off with 100 pigeons and ends up with 150 — the 50 pigeons are weaned off from various competitions.

Kabbootarbaazi, also known as Kulkulbaazi, is an annual festival that many say is attracting more and more youngsters each passing year. They are being pulled to such events for the love of one of India's oldest sports.

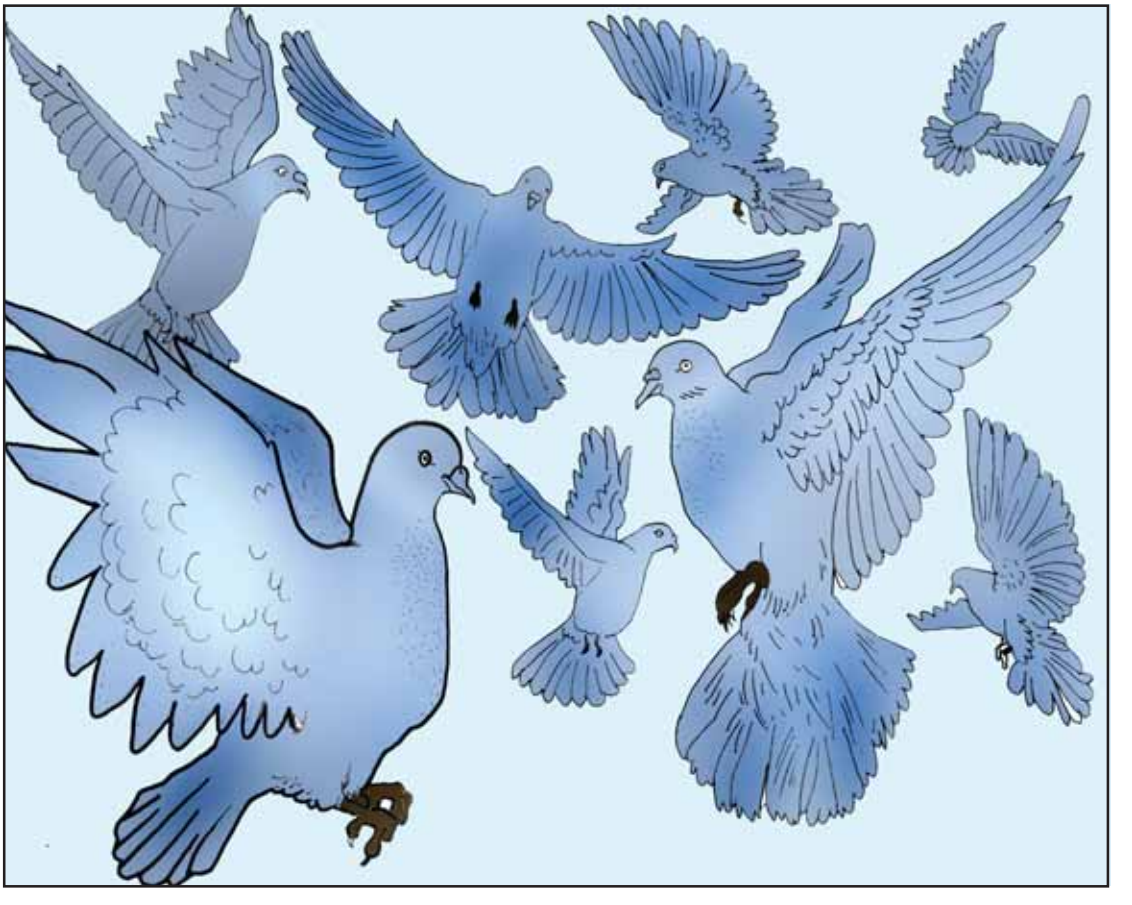

The competition was revived in 2004 and draws some of the best pigeon-fanciers. The venue is changed every day so that the birds do not have the advantage of recognizing the lofts on which they were raised.

The festival of sorts goes on for a week. Pigeons are literally raised like kids and fed on a rich diet of dry fruits, desi ghee, millet and corn. A typical *khalifa* spends hours every day to train his birds.

P-65, Pandav Nagar
Mayur Vihar, Phase-I
Delhi-110091

जरा-सी भूल

सरला भाटिया

''आज तो शुक्रवार का बाजार है न दादी – मैं भी आपके साथ सब्जी और फल खरीदने चलूँगी।'' मीता हँसकर बोली।

''जरूर चलना, अच्छा, सब्जी उठाने में मेरी मदद हो जाएगी। वह कॉटन का रंगीन थैला अपने साथ ले चलना, उसी में भरकर फल–सब्जी लाएँगे।''

''दादी, अब तो हमारे स्कूल में भी कई जगह लिखा गया है, पॉलीथीन को न कहो। यह बीमारी का घर है। सब जगह गंदगी फैलाता है और पानी में गलता भी नहीं।''

''ठीक किया है, पर लोग समझें तब न! स्वस्थ रहने के लिए सफाई बहुत जरूरी है। सफाई में मामूली–सी चूक के कारण बीमारी का खतरा बढ़ जाता है।'' इतने में आनंद भी आ गया और बोला, ''दादी, शुक्रवार का बाजार तो लग गया; चलो, मैं भी आपके साथ चलूँगा। साइकिल पर आपके थैले उठा लाऊँगा।''

''वाह! आज तो सभी मेरी मदद करने को तैयार हैं। मैं तैयार होकर आती हूँ।''

बाज़ार की शोभा देखते ही बनती थी। सब्जी वालों की रेड़ियाँ एक तरफ और कपड़ों आदि की दुकानें दूसरी तरफ। एक दुकानदार ने तो शामियाना भी लगा रखा था।

''दादी, मेरे लिए एक नैपकिन खरीद दो, स्कूल में रोज एक चाहिए।''

दाम पूछने पर दादी बोली, ''तीस रुपए के छह नैपकिंस तो सस्ते ही हैं। भई, नीले रंग के नैपकिंस पैक कर देना।''

''फल और सब्जी की मार्केट चलो। अब वहाँ चलते हैं।'' दादी ने आगे कहा।

''भई, पपीता कैसे हैं? क्या दाम हैं?''

''माँ जी, 20 रुपए किलो हैं डिस्को पपीता। बड़ा उम्दा है। आप तो यहाँ हर

शुक्रवार को आती हैं। मैं तौलकर पैक कर देता हूँ।''

''छोटे–छोटे दो पपीते देना, वही ठीक रहेगा।'' गाजर, मूली, शिमला मिर्च, मटर, पालक और मैथी खरीद लेने के बाद थैला काफी भारी हो गया तो आनंद ने एक दूसरा थैला निकाल लिया।

"दादी, बाकी के फल इसमें डाल दो – घर तो पास ही है। मैं वहाँ जाकर रख आता हूँ।"

दस वर्ष का आनंद खूब होशियार है। परिश्रम करने में उसे खूब मजा आता है। साइकिल पर घूमना अच्छा लगता है।

घर पहुँचकर दादी बोली, ''मीता बेटी, इस थैले को अभी बाहर ही रहने देना। कभी भी बाजार से सीधे सब्जी लाकर फ्रिज में नहीं रखनी चाहिए।''

''क्यों दादी?''

''बिना धुली सब्जी में कई प्रकार के बैक्टीरिया यानी कीटाणु चिपके होते हैं, जो हवा में घुलकर पूरे फ्रिज के वातावरण को प्रदूषित करते हैं। फिर, इन सब्जियों से छुए गए हाथ किसी अन्य खाद्य सामग्री से छू जाने का डर भी रहता है, जिससे 'डक वर्म' जैसे कीड़े के अंडे पेट में चले जाते हैं और एनीमिया की आशंका हो जाती है। इसलिए नीता, सब्जी और फल को स्टील वाले सिंक में डालकर धो लो। धोने से एक और लाभ है कि उन पर लगे रासायनिक दवा का असर भी कुछ हद तक खत्म हो जाता है।''

''दादी, मैं तो गाजर का जूस पिऊँगा– तब तो दीदी गाजरों को खूब अच्छी तरह से धोकर छील लो, फिर जूस निकालना।''

''दादी, साफ–सफाई के बारे में कुछ और भी बताओ न? निबंध लिखने में आपकी जानकारी काम आएगी!''

''बेटी, अकसर महिलाएँ खाना बनाते समय बीच में अन्य छोटे–छोटे काम जैसे टेलीफोन सुनना, दरवाजा खोलना या छोटे बच्चे को साफ करना आदि करती हैं। पर हाथों को धोना भूल जाती हैं। जगह–जगह की गंदगी उनके हाथों में चिपक जाती है जो भोजन के साथ पेट में चले जाने के कारण बीमारी की वजह बन जाती है। रसोईघर में हाथ पोंछने आदि के लिए, गैस साफ करने के लिए, बरतन पोंछने के लिए तथा किचिन का प्लेटफॉर्म साफ करने का पोंछा भी अलग होना चाहिए, क्योंकि फर्श पर जूते–चप्पलों की गंदगी कपड़े से चिपककर यदि खाने–पीने वाली चीजों के रखने वाली जगह या बर्तनों पर लग जाए तो वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होगी।''

''पर दादी, इन कपड़ों को हर रोज साबुन से अच्छी तरह से धोकर तेज धूप में भी तो डालना चाहिए। ऐसा हमारी स्कूल की मैडम ने बताया था। कपड़ों और नैपकिनों की सफाई, गर्म इस्तरी करके की जा सकती है।''

''सही बताया मैडम ने। और हाँ, बाई से कहना, बर्तन धोने के बाद सिंक की साफ–सफाई अच्छी प्रकार से करे। उसके कोनों में अकसर कूड़ा–करकट फँस जाता है, जो बाद में बर्तनों से मिल जाता है। सिंक के कोने तथा नालियों के आस–पास की सफाई में झींगुर, कॉकरोच व अन्य छोटे–मोटे कीड़ों–मकोड़ों से बचाव हो सकता है। वरना ये कीड़े तो बीमारी का घर हैं मीता।'' दादी ने कहा।

''आजकल पानी भी तो बहुत गंदा हो गया है, दादी। ज्यादातर बीमारियाँ पानी से ही होती हैं–टाइफाइड और पीलिया रोग तो इसी की देन है। ये सभी जलजनित बीमारियाँ हैं, है ना दादी?''

''बिटिया, तू तो दसवीं क्लास में पहुँच गई है। तुझे तो सब कुछ सिखाया जाता है। जिस पानी में हम भोजन पकाते हैं वह साफ होना चाहिए और पीने का पानी तो सदा उबालकर ही पीना चाहिए। वैसे, पानी शुद्ध करने वाले अनेक उपकरण का प्रयोग भी किया जा रहा है, पर उबाला हुआ पानी सबसे अच्छा है।''

''अब तो हम भोजन तैयार करके फ्रिज में रखते हैं, लेकिन कोई भी व्यंजन बहुत ज्यादा समय तक नहीं रखना चाहिए। और भोजन को ढककर फ्रिज में रखना चाहिए। ठण्डे वातावरण में हानिकारक कीटाणुओं की वृद्धि बहुत कम हो जाती है।''

''दादी, खाने–पीने के सामान को अखबार के कागज में लपेटना भी गलत है। क्योंकि इसकी स्याही भोजन में लगकर पेट में चली जाती है। इससे दिमाग पर

बुरा असर पड़ता है और कैंसर होने का भी खतरा रहता है। मैडम ने बताया था कि खाना रखने के लिए नैपकिन, सफेद कागज या कपड़े का प्रयोग करना चाहिए।

''दादी, आज मैं अपना बाथरूम भी स्वयं साफ करूँगी। मम्मी–पापा खुश हो जाएँगे। पहले बाल्टी और मग साफ करूँगी और फिर टाइलें और सिंक आदि। आनंद, तू मेरा हाथ बँटाएगा ना?''

''दीदी, मुझे तो काम करने में खूब मजा आता है, पर मुझसे पानी की भरी बाल्टी तो उठाई नहीं जाती।''

''मैं तेरी मदद करूँगी। जा, पहले पौधों में पाइप से पानी डाल दे। तब तक मैं तेरे लिए जूसर से गाजर का जूस निकालती हूँ। दादी, आप भी पिओगी ना!''

''जरूर पिऊँगी बिटिया! ला, मैं गाजरों को छील दूँ। अब तो बिजली भी आ गई है। मिलजुलकर काम करने में कितना मजा है!'' दादी की बातों को सुनकर आनंद अपनी कविता रटने लगाः

काम के समय काम
खेल के समय खेल
जीवन में खुशी के लिए
अपनाओ ये मेल।
आधी–अधूरी कोशिश से
अगर किया काम
जीवन की रणभूमि में
हो जाओगे नाकाम।

उसका यह गाना सुनकर सब हँस पड़े।

सी–13, स्वामी नगर (साउथ)
नई दिल्ली–110017

How the Tortoise got his Shell!

Ratna Manucha

The tortoise was a slow and lazy creature — and because he was slow, he was also very forgetful.

One moment he would be searching for some nice, juicy leaves to nibble on, but before he could reach the leaves, he had forgotten where he was going! You see, he had spotted some butterflies flitting about and had started playing with them. He had completely forgotten about his hungry stomach!

"Ooh! I'm having so much fun!" the tortoise cried gleefully as he played hide-and-seek with the butterflies. "But why is my stomach rumbling so much?"

"May be you're hungry", suggested a butterfly helpfully.

At once the tortoise remembered that he was going to eat his breakfast when he started playing with the butterflies.

"Oh! Yes! I'd better be going home", he replied as he crawled off.

But there was one more thing the tortoise always forgot — he just couldn't remember where he lived!

It was lunchtime by now and most of the animals in the forest were scurrying back home for their afternoon siesta.

The tortoise stood by and watched the animals hurrying past. He completely forgot that he was hungry! "I think, I'll have a little nap too", he decided and crawled slowly into the first hole that he saw.

But the hole was too narrow and the tortoise found himself squeezing against a very angry snake.

"What are you doing here?" hissed the snake angrily.

"Why, I've come for my afternoon siesta", replied the tortoise. "What are you doing in my home?"

"Oh, you silly creature! hissed the snake in exasperation. "You've forgotten your home again".

The tortoise crawled sheepishly out of the hole and entered the rabbit's burrow nearby. But the rabbit was busy feeding carrots to her little bunnies and there was no place for the tortoise.

"I wish you would remember where you lived and stopped being an unwelcome visitor", complained the rabbit.

The tortoise, mouth open, front hands on his head. The rabbit has turned away and is putting her bunnies to sleep. Dim lights.

The poor tortoise was feeling very confused. “Why am I so forgetful?” he asked himself. “I crawled out from my house this morning. How could, I have forgotten where I live?”

“Do you know where I live?” he asked the rabbit. “I don’t know why I’m such a muddle-head”.

“Get out of my burrow and ask someone else”, snapped the rabbit crossly as she turned to put her bunnies to sleep.

“I am indeed a muddle- head, thought the tortoise to himself. “It would be so much easier if I could carry my home with me whenever I went and then, I wouldn’t have to worry at all!”

This thought made the tortoise smile. He was so proud of himself for thinking of such a wonderful idea!

“I wish the Lord of the Jungle could read my thoughts”, said the tortoise to himself.

Far, far away, the Lord of the Jungle could indeed read the thoughts of the tortoise. In fact, he knew what each animal in his forest was thinking! He was aware of how the poor tortoise was pushed around by the other animals due to his forgetfulness. So, he thought of a plan.

“I think I’ll give the tortoise a nice, hard shell on his back, which he can use as his home. Since he is such a slow and forgetful creature, this shell will keep him from all harm”.

The Lord of the Jungle used his magic power and whoosh! All of a sudden the tortoise had a beautiful shell on his back.

“This is your new home”, the Lord of the Jungle told the tortoise as he smiled down at him.

“Now you do not have to worry about trying to remember where you live. You will always carry your home on your back and whenever you feel tired, you can curl up inside, without a care in the world. It will protect you from the sun and the rain and from anybody else who may try to harm you”.

Saying this, the Lord of the Jungle disappeared. This is how the tortoise got his shell on his back!

Principal
Little Flower School
6, Haridwar Road
Dehradun-248001 (Uttarakhand)

हरे अंडों वाले एमू

शैलेन्द्र सरस्वती

अगर आप अफ्रीका के शुष्क अथवा किसी बरसाती जंगलों की सैर करने जाएँ तो आप एक पक्षी को देखकर चौंक सकते हैं। लंबी गर्दन वाले इस पक्षी को देख अगर आप सोच रहे होंगे कि कहीं ये हमारे भारत के राजस्थान में पाया जाने वाला पक्षी गोडावण तो नहीं? तो महाशय, आप बिलकुल गलत सोच रहे हैं। यह पक्षी है एमू–शुतुरमुर्ग के बाद संसार का सबसे बड़ा पक्षी।

सम्पूर्ण विश्व में एमू की सिर्फ तीन प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इस पक्षी की औसत ऊँचाई 6 से 7 फुट तक होती है, यानी एक सामान्य मनुष्य जितनी अथवा उससे भी अधिक।

ऑस्ट्रिच प्रजाति के इस शर्मीले पक्षी का वजन 30 से 45 किलोग्राम तक ही होता है, यानी एक विशाल कद होने के बावजूद यह धरती पर हलके होने की वजह से बड़ी आसानी से बहुत ही तेज रफ्तार से दौड़ सकता है। जानते हैं, कितनी रफ्तार से? 50 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से! तभी तो अच्छे–अच्छे शिकारियों को इसका पीछा करने में पसीना छूट जाता है। इस तेज रफ्तार में इसकी लंबी टाँगों का काफी योगदान होता है। ये टाँगें इसकी गर्दन जितनी ही लंबी होती हैं। तो यह पक्षी अपनी लंबी टाँगों की वजह से ही अपनी जान बचाने में सक्षम होता है।

इसके पंख अविकसित होते हैं, अतः एमू कभी उड़ नहीं पाता। रोचक तथ्य तो यह है कि एमू के पंजों में सिर्फ तीन अँगुलियाँ ही होती हैं, जो इसके भागने में सहायक होती हैं तथा चलते समय गजब का संतुलन बनाए रखती हैं।

एमू की आवाज बड़ी विचित्र होती है। इसकी आवाज गले से घुटकर कुछ इस तरह से निकलती है कि इस आवाज को लगभग 2 किलोमीटर की दूरी से भी सुना जा सकता है। इसकी विचित्र आवाज की वजह यह है कि इसकी गर्दन से निकलने वाला स्वर नाक के रास्ते से कंपित होकर

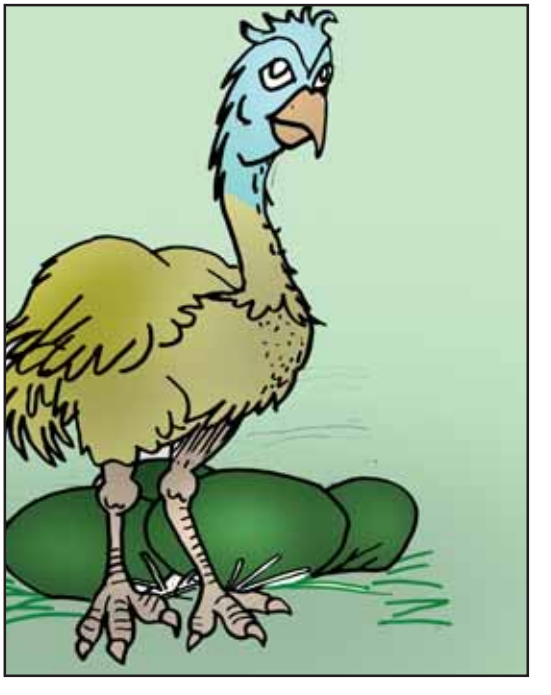

निकलता है। इस तरह आवाज में स्वर का योग होने से आवाज काफी विचित्र और तेज हो जाती है।

एमू के पंख और चमड़ी इस तरह से बनी होती है कि यह अपनी उष्मा को बिखरने नहीं देता। ऊपर से भारी और एक ही हड्डी से बने इसके पंख बाहर की ठंडक को रोक देते हैं। इन पंखों की नीचे की त्वचा काली होने से, अंदर की गर्मी स्वतः ही अवशोषित हो जाती है और उसे पंखों तक ही बनाए रखती है। अपनी इसी विशेष शारीरिक बनावट के कारण एमू शुष्क और बरसाती वनों के कारण वातावरण में खुद को आसानी से ढाल लेते हैं।

एमू गर्मियों में जहाँ पेड़ों पर उगी वनस्पति ही खाते हैं, वहीं वर्षा ऋतु के समय उछलने वाले कीट, जैसे झींगुर और टिड्डे इनकी मनपसंद खुराक बनते हैं। खाने की तलाश में एमू एक दिन में 15 किलोमीटर की दूरी तय करता है।

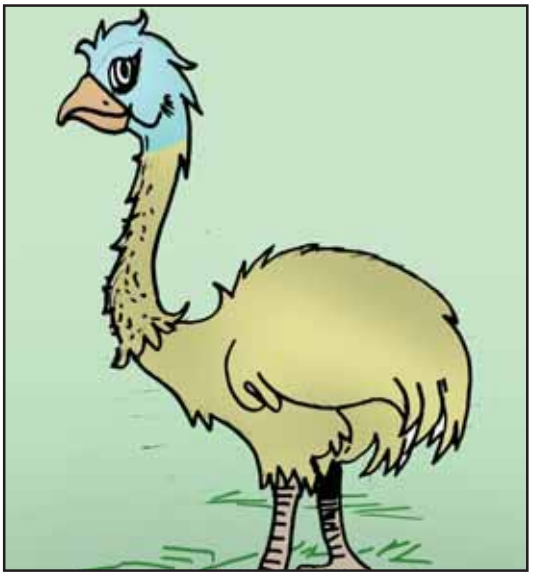

मादा एमू सूखी जमीन पर झाड़ियों के बीच कई आड़ी–तिरछी सूखी डंडियाँ लगाकर अपना घोंसला बनाती है। घोंसला बनाने में नर अधिक सहयोग करता है। और तो और, अंडा सेने का काम भी मादा नहीं, बल्कि नर एमू ही करता है। मादा एमू साल में 30 अंडे देती है लेकिन अंडों की अधिकतम संख्या 60 भी हो सकती है। ये अंडे आकार में काफी बड़े होते हैं और इनका वजन 400 से 900 ग्राम तक होता है। एमू का एक अंडा मुर्गी के पंद्रह अंडों के बराबर होता है।

और अब आपको हैरान कर देने वाली जानकारी–दुनिया में जहाँ दूसरे पक्षी प्राय सफेद रंग के अंडे देते हैं, एमू के अंडे उनसे ठीक उलट, हरे रंग के होते हैं। अंडों से निकले बच्चों की पीठ पर सफेद और सलेटी पट्टियाँ बनी होती हैं। वयस्क होने पर एमू की ये पट्टियाँ गायब हो जाती हैं और सारा शरीर सलेटी रंग की बालों वाले भारी–भरकम पंखों से ढक जाता है।

एमू के बारे में दुखद तथ्य यह है कि इनके अंडों तथा माँस को पाने के लिए इनका भारी तादाद में शिकार किया जा रहा है। इसके शरीर से निकलने वाला तेल भी कुछ आयुर्वेदिक दवाइयों में उपयोग होने के कारण इसकी जान का दुश्मन बन गया है। यही वजह है कि दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पक्षी विलुप्ति की कगार पर पहुँच गया है।

नारायणी निवास, मोबाइल टॉवर के सामने,
आचार्य रमण कॉलोनी, अस्तो की बारी के बाहर
बीकानेर–334005 (राजस्थान)

Book Review

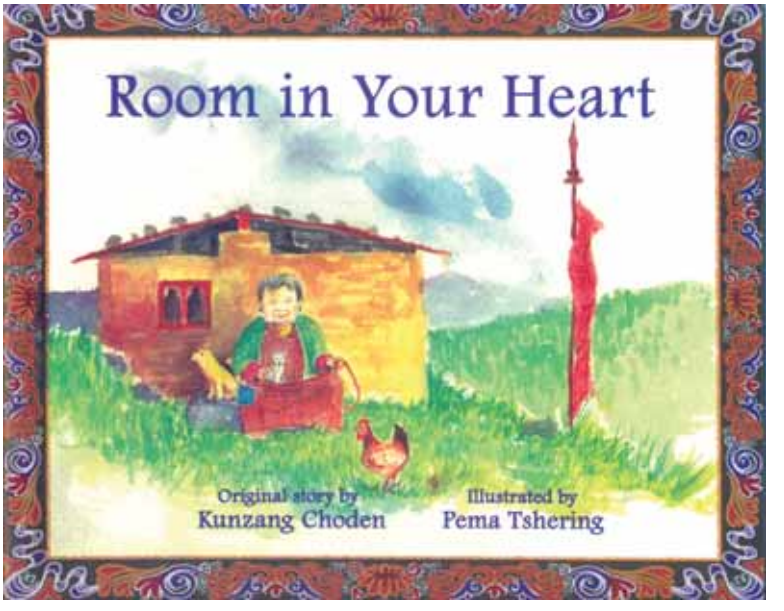

An old lady lived in a little house among the mountains high. A grey cat, a yellow dog and a brown hen also lived with her. One evening as she was about to prepare dinner, a monk stood at her door and asked if there was any room for him. The old lady welcomed him and started preparing the dinner.

As she was about to serve the food to the monk, she heard a voice of a young man, requesting her to stay at her home. In meantime, other visitors including a woman and two men with a donkey also knocked her door and asked for help. The generous old lady welcomed them all and shared dinner with them.

The visitors wondered and asked the old lady how she managed to fit them all in her small home. The old lady smiled. The monk replied, "There will always be room in your home, as long as there is room in your heart."

This charming folktale from Bhutan, contains teachings about openness and generosity of spirit.

Room in Your Heart
Kunzang Choden
Illustrated by Pema Tshering
Young Zubaan
ISBN 978-81-89884-95-6
₹195/-

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/05/2013